आरएच नेगेटिव ब्लड ग्रुप वाली महिलाएं गर्भावस्था संबंधी गंभीर समस्याओं का सामना कर सकती हैं

डॉ. आशा बक्शी
मुख्य कंसल्टेंट
आशा बक्शी
फर्टिलिटी सेक्टर

दुर्लभ आरएच नेगेटिव ब्लड टाइप से पीड़ित महिलाओं को आरएच असंगता होने से उत्पन्न गर्भावस्था संबंधी समस्याओं का सामना करने का ज्यादा खतरा होता है। आरएच असंगता एक असामान्य लेकिन खतरनाक ब्लड ग्रुप संबंधी डिसऑर्डर है जो भ्रूण के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होता है। अगर इस स्थिति का इलाज न किया जाए तो आरएच असंगतता गर्भधारण के परिणामस्वरूप नवजात शिशु में गर्भावस्था का नुकसान, भ्रूण में खून की कमी, गंभीर पीलिया और यहां तक कि नवजात बच्चे में न्यूरोलॉजिकल समस्याएं भी पैदा कर सकता है। आरएच असंगतता की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब आर नेगेटिव ब्लड ग्रुप वाली महिला आरएच पॉजिटिव बच्चे को गर्भ में धारण करती है।आरएच फैक्टर या आरएच इश्यू फैक्टर आनुवंशिक रूप से जन्मजात प्रोटीन होती है जो लाल रक्त कोशिकाओं की सतह पर पाया जाता है। जिन लोगों को यह प्रोटीन जन्म से मिला होता है वे आरएच पॉजिटिव होते हैं,मतलब उनमे ब्लड ग्रुप ए+, बी+ और ओ+ होता है। जबकि जिनमे यह प्रोटीन नहीं होता है वे आरएच नेगेटिव होते हैं, इसका मतलब यह है कि उनके ब्लड ग्रूप ए-, बी- और ओ-(निगेटिव) होंगे। मदरहुड हॉस्पिटल, इंदौर के साझेदारी में चलने वाले आशा बक्शी फर्टिलिटी सेक्टर की मुख्य कंसल्टेंट डॉ. आशा बक्शी ने कहा कि भारतीय महिलाओं में आरएच-नेगेटिव ब्लड ग्रुप लगभग 2 से 10 फीसदी महिलाओं है और 60 फीसदी तक आरएच नेगेटिव महिलाओं में आरएच पॉजिटिव बच्चे होते है। यह एक ऐसी स्थिति होती है जिसे आरएच असंगतता या कहा जाता है।

डॉ. आशा बक्शी ने और ज्यादा इस समस्या पर प्रकाश डालते हुए कहा, वैसे तो आरएच फैक्टर किसी भी व्यक्ति को प्रभावित नहीं करता है, लेकिन नेगेटिव आरएच फैक्टर गर्भावस्था पर प्रमुख रूप से असर डाल सकता है। जब एक आरएच नेगेटिव महिला एक आरएच पॉजिटिव बच्चे को गर्भ में धारण करती है, तो मां का शरीर भ्रूण को कोई बाहरी वस्तु की तरह महसूस कर सकता है और इसके खिलाफ एंटीबॉडी विकसित कर सकता है। इससे पहली गर्भावस्था में कोई समस्या नहीं होती है, लेकिन बाद के गर्भधारण में आरएच एंटीबॉडीज मां का खून तब प्लेसेंटा को पार कर सकता है और भ्रूण की रक्त कोशिकाओं पर आरएच फैक्टर पर हमला कर सकता है। ये एंटीबॉडी भ्रूण की रक्त कोशिकाओं को नष्ट कर सकते हैं और भ्रूण के स्वास्थ्य पर कई संभावित विनाशकारी प्रभाव डाल सकते हैं। यही कारण है कि सभी गर्भवती महिलाओं को हॉस्पिटल में अपनी पहली प्रसवपूर्व विजिट में ही आरएच ब्लड टाइप की जांच करानी चाहिए। मां का इम्यून रिसपोंस (प्रतिरक्षा प्रक्रिया) अक्सर भ्रूण के आरबीसी को नष्ट कर देता है जिससे भ्रूण में एनीमिया हो जाता है। कुछ केसेस में इससे हाइड्रोप्सफेटलिस (भ्रूण में अत्यधिक द्रव का इकट्ठा हो जाना और एडिमा), भ्रूण में हार्ट का फेल होना, या यहां तक कि गर्भाशय में ही भ्रूण की मौत या पैदा होते ही बच्चे की मौत हो सकती है। आरएच की समस्या होने से बच्चे में एनीमिया हो सकता है जिससे नवजात शिशु में गंभीर पीलिया भी हो सकता है। दरअसल इस तरह की समस्याओं से पीड़ित बच्चों में हाइपर बिलुरब की घटना 76.2 प्रतिशत तक होती है और इसके परिणामस्वरूप कर्निकटेरस और न्यूरोलॉजिकल समस्या हो सकती है। इस समस्या से कोई भविष्य में नुकसान हो न हो इसलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि सभी गर्भवती महिलाओं की आरएच असंगतता की संभावना के लिए जांच की जाए और अगर जरुरी हो तो समय पर इलाज भी शुरू किया जाए।